अधिसूचना संख्या : 519/ 2022 **अधिसूचना तिथि** : 23-08-2022

शोधार्थी : मुकुल रंजन झा

शोध निर्देशक : प्रो. नीरज कुमार

विभाग : मानविकी एवं भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली – 110025

विषय : **समकालीन हिंदी यात्रा-वृत्तांत साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन**

(सन् 1990 से 2015 तक)

बीज शब्द: 1. यात्रा-वृत्तान्त, समाजशास्त्र, प्रकृति, जीवन, सौंदर्य

शोधार्थी की स्थापनाएँ

1. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यात्रा वृत्तान्त साहित्य ऐसी सामग्री से परिपूर्ण है | जिससे विभिन्न समाजों में विविधता के बारे में पता लगता है | विविधता इतनी व्यापक है कि इन्हें वर्गीकृत करना भी प्रायः कठिन है |
2. पिछले कुछ वर्षों में समाज की अवधारणा और लोकतन्त्र के प्रति चिंता ने यात्राओं में एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है क्योंकि यात्राओं की दुनिया में सबसे अहम विषय समाज ही है |
3. यात्रा वृत्तान्तकारों ने व्यक्तियों की भावनाओं का चित्रण करके हिन्दी यात्रा वृत्तान्त में व्यक्ति का ऐसा रूप प्रस्तुत किया है जिसमें वह अपनी भीतरी छवि देख सकते हैं | यात्रा वृत्तान्तकार बाहरी सत्य की अपेक्षा आंतरिक सत्य को ही प्रामाणिक और विश्वसनीय मानते हैं | अतः उसे ही मानना महत्त्वपूर्ण है |
4. यात्रा वृत्तान्तकारों की यात्रा का उद्देश्य पाठक में ऐसी योग्यता उत्पन्न करना है जिससे यात्रा के अनुभवों को जीवन से जोड़ा जा सके |
5. यात्रा-वृत्तान्तकारों का अध्ययन तुलनात्मक दृष्टि से यह बताता है कि विभिन्न देशों की सरकारें समाज की आवश्यकताओं को किस प्रकार पूरा कर रही है |

निष्कर्ष

हिन्दी में यात्रा-वृत्तांतों का प्रारंभ भारतेंदु काल से हुआ। तबसे लगातार यात्रा-वृत्तान्त का विकास होता गया और उसकी एक व्यवस्थित परम्परा बन गई| इसमें अनेकों यात्रा-

वृत्तान्तकारों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यात्रा-वृत्तान्त में यात्रा-वृत्तान्तकारों की छवि एक ऐसे यात्री के रूप में उभरती है जिसमें यात्रा की तमाम बाधाओं का सामना करने का साहस है और अशेष जिज्ञासा है। यात्रा के दौरान अपनी टिप्पणियों में वे अत्यंत उन्मुक्त और उदार व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं।

समाज के बदलाव के प्रति वे प्रतिबद्धता महसूस करते हैं। उनकी जागरूकता उन्हें संघर्ष की प्रेरणा देती है। इन यात्रा- वृत्तान्तकारों की संवेदनाएँ अनेक रूपों में उभरी हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि समाज और यात्रा-वृत्तान्त का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यात्रा वृत्तान्तकार जो कुछ देखते सुनते, ग्रहण करते हैं उन सबका प्रभाव उन पर पड़ता है। मन पर पड़े प्रभावों से वे झंकृत होते हैं। उनकी कुछ न कुछ प्रतिक्रिया अवश्य होती है। वह दुखी होते हैं | खुश होते हैं | उन्हें चिन्ता, भय, रोमांच इत्यादि का अनुभव होता है। इन अनुभूतियों को यात्रा-वृत्तान्तों में व्यक्त किया गया है।

यात्रा-वृत्तान्तों में जीवन के अनेक रूप और स्थितियाँ मिलती है। जैसे – नदी, पहाड़,